गीडा में तैयार प्लास्टिक दाना से बनेगी कोका कोला की बोतल

राजीव रंजन • जागरण

- एसएलएमजी बेवरेजेज बनाएगा कोका कोला की बोतल के लिए दाना
- 600 लोगों को मिलेगा रोजगार अगले साल से उत्पादन होगा शुरू

कंपनी बेकार प्लास्टिक की बोतलों से दाना (रेजिन) तैयार करेगी। कोका कोला कंपनी समेत अन्य कंपनियों को इनकी आपूर्ति बोतल बनाने के लिए की जाती है। जरूरत के अनुसार प्रदेश के विभिन्न जिलों से प्लास्टिक की बेकार बोतलें मंगाई जाएंगी। गोरखपुर से भी इनकी खरीद होगी। 2026 से इनका उत्पादन शुरू कर दिया जाएगा। -आदित्य पाल, लाइजनिंग आफिसर, एसएलएमजी बेवरेजेज।

गोरखपुर: बेकार हो चुकीं प्लास्टिक की बोतलें गोरखपुर के उद्योगों के लिए काम आने वाली हैं। इन बोतलों को रिसाइकिल कर कोका कोला कंपनी की बोतलें बनाने के लिए प्लास्टिक दाना (रेजिन) तैयार होगा। कोका कोला की पार्टनर कंपनी एसएलएमजी बेवरेजेज अगले साल से इसका उत्पादन शुरू कर देगी। गीडा के प्लास्टिक पार्क में भूखंड के आवंटन के बाद कंपनी ने निर्माण की कवायद शुरू कर दी है। 2026 की शुरुआत में ही कंपनी वेस्ट प्लास्टिक बोतल को रिसाइकिल कर इस दाने को तैयार करना शुरू कर देगी। इससे न सिर्फ 600 लोगों को रोजगार मिलेगा बल्कि प्लास्टिक पार्क की कंपनियों की जरूरतें भी पूरी होंगी।

प्लास्टिक की बोतलें शहर के लिए भी बहुत बड़ी समस्या हैं। ये न सिर्फ नालों आदि को चोक कर देतीं हैं, बल्कि अन्य कई तरह से पर्यावरण को नुकसान भी पहुंचाती हैं। राष्ट्रीय स्तर पर इनके निदान की कवायद शुरू की गई है। गोरक्षनगरी भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाने जा रही है। प्लास्टिक के बोतल वाले कचरे को रिसाइकिल कर फिर से काम का चीज बना दी जाएगी। एसएलएमजी बेवरेजेज इसके लिए रिसाइकलिंग प्लांट लगाने जा रही है।

योजना के अनुसार कोका कोला की पार्टनर कंपनी एसएलएमजी बेवरेजेज प्रति वर्ष 36 हजार टन प्लास्टिक की बोतलों को रिसाइकिल करेगी और करीब 24 हजार टन ग्रेनुअल (दाना) तैयार करेगी। बेकार हो चुके प्लास्टिक को फिर से इस्तेमाल करने लायक बनाकर कंपनी पर्यावरण संरक्षण में मदद करेगी।

देश के अन्य स्थानों से भी कच्चे माल की आपूर्ति : कंपनी को प्रति वर्ष करीब 36 हजार टन प्लास्टिक की बोतलों की आवश्यकता पड़ेगी। इस जरूरत को कंपनी आसपास के जिलों से पूरा करेगी। यहां की बेकार हो चुकी प्लास्टिक बोतलें मानक पर खरी उतरेंगी तो कंपनी खरीद करेगी। गोरखपुर शहर से प्रति दिन करीब चार से पांच टन प्लास्टिक कचरा निकलता है। नगर निगम इन्हें मटेरियल रिकवरी फैसिलिटी (एमआरएफ) सेंटर के माध्यम से इनका संग्रह कराता है। जिसे आवंटित फर्म के द्वारा कानपुर आदि जगहों पर भेजा जाता है।

बड़े उद्योगों की वजह से खुली छोटे उद्योगों की राह: बड़े उद्योगों के आने से छोटे उद्योगों के लिए भी राह खुल रही है। खाद कारखाना के फिर से शुरू होने से हाई डेनसिटी पालीथीन (एचडीपी) बैग बनाने वाली कंपनियों को भी काफी फायदा हुआ है। माडर्न लेमिनेटर्स, एबीआर पेट्रो समेत कुछ और कंपनियां खाद कारखाना में अपने बैग की आपूर्ति करती हैं। वहीं, गैलेंट, सुरेश एग्रो, गोयल एडिबल आदि कंपनियों में तैयार होने वाला मैदा का आपूर्ति पारले-जी, क्रेजी ब्रेड समेत अन्य कंपनियों में होता है। गन मेटल, कास्ट आयरन समेत अन्य कास्टिंग के उत्पाद भी गीडा की विभिन्न कंपनियों को यहां की फैक्ट्रियों से की जाती है। वहीं अब गीडा के प्लास्टिक पार्क में जिस तरह की कंपनियां स्थापित हो रही हैं, वह प्लास्टिक उद्योगों की जरूरतों को पूरा करने में काफी सहायक साबित होगी।